जुड़, शि बन्धे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (तुदां-परं-सकं-सेट्।) शि, जुड़ति अजुड़ीत्। ताहुच्छङ्खलतापन्नान् प्रबन्धेन जुडत्यसौ। जुजोड़। इति दुर्गादासः॥

जुत, ऋ ङ दीप्तौ। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-आत्मं-अकं-सेट्।) ऋ, अजुजोतत्। ङ, जोतते। इति दुर्गादासः॥

जुन, श गतौ। इति कविकल्पद्रुमः॥ (तुदां-परं-सकं-सेट्।) श, जुनति जोनिता। इति दुर्गादासः॥

जुर्व, ई वधे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-परं-सकं-सेट्।) हस्वी। जूः जुरौ जुरः। ई, जूर्णः। इति दुर्गादासः॥

जुल, क पिषि। इति कविकल्पद्रुमः॥ (चुरां-परं-सकं-सेट्।) क, जोलयति। पिषि चूर्णीकरणे। इति दुर्गादासः॥

जुष, कि तर्के। छम्नौ। इति कविकल्पद्रुमः॥ (चुरां पक्षे भ्वां-परं-सकं-अकं च-सेट्।) कि, जोषयति जोषत्यन्यगुणं सुधीः। तर्कयतीत्यर्थः। इति दुर्गादासः॥

जुष, श ङ ई ञि मुदि। सेवे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (तुदां-आत्मं अकं-सकं च-सेट्।) पञ्चमस्वरी। श ङ, जुषते। ई ञि, जुष्टोऽस्ति। मुदि हर्षे। इति दुर्गादासः॥

जुष्कक:, पुं, (जुष्+कक्। ततः संज्ञायां कन्।) यूषः। इति शब्दचन्द्रिका॥

जुष्टं, क्ली, (जुष्यते स्म इति। जुष+क्तः।) उच्छिष्टम्। सेविते, त्रि। इति मेदिनी। टे, १५॥ (यथा, भट्टिः। १। ४।

"पुण्यो महाब्रह्मसमूहजुष्टः
सन्तर्पणो नाकसदां वरेण्यः॥")

जुष्य:, त्रि, (जुष्+कर्म्मणि क्यप्।) सेव्यः। इति मुग्धबोधम्॥

जुहुवान:, पुं, (हूयते इति। हु+कर्म्मणि कानच्।) कठिनहृदयः। अग्निः। हवः। इति संक्षिप्तसारे उणादिवृत्तिः॥

जुहूः, स्त्री, (जुहोत्यनया। इति हु+"हुवः श्लुवच्च।" उणां। २।६०। इति क्विप् निपातनात् दीर्घत्वं द्वित्वञ्च।) पलाशकाष्ठनिर्म्मितार्द्धचन्द्राकृतियज्ञपात्रम्। जुहोत्यनया जुहूः। इत्यमरभरतौ॥ (यथा, ऋग्वेदे। १। ७६। ५।
"अग्ने! मन्द्रया जुह्वा यजस्व॥")

जुहूराण:, पुं, (जुहूं रणति इति। "कर्म्मण्यण्।" ३। २। १। इत्यण्।) अग्निः। अध्वर्युः। इति विश्वः॥ चन्द्रः। इत्युणादिकोषः॥

जुहूवान्, [त्] पुं, (जुहूः पात्रं होमक्रियोद्देश्यतयास्त्यस्मिन्। जुहू+मतुप निपातनात् मस्य वत्वम्।) अग्निः। इति शब्दरत्नावली॥

जूः, स्त्री, (जु+"क्विब्वचिप्रच्छीति।" उणां। २। ५७। क्विप् दीर्घश्च।) आकाशः। सरस्वती। पिशाची। जवनम्। इति शब्दरत्नावली॥ त्वरागमनम्। गमनम्। इति मेदिनी। जे, २॥

जूटः, पुं, (जट सङ्घाते+अच् निपातनादूत्वागमे साधुः।) शिवजटा। इत्यमरटीकायां भरतः। जटा। इति शब्दरत्नावली॥

जूटकं, क्ली; (जूट+स्वार्थे कन्।) केशबन्धः। जटा। इति भूरिप्रयोगः॥

जूतिः, स्त्री, (जु वेगे+"ऊतियूतिजूतीति।" ३।३।९७। इति क्तिन् निपातनात् दीर्घत्वञ्च।) वेगः। इत्यमरः। ३। २। ३९॥ (यथा, अथर्व्ववेदे। १३। २। १३।
"तं समाप्नोति जूतिभिः॥")

जूतिका, स्त्री, (जूत्या कायतीति। कै+कः। तत टाप्।) कर्पूरभेदः। इति राजनिर्घण्टः॥

जूर, ङ य ई ज्यानौ। वधे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (दिवां-आत्मं-अकं-सकं-च-सेट्।) दीर्घी। ङ य, जूर्य्यते। ई, जूर्णः। ज्यानिर्गतवहुवयोभावः। इति दुर्गादासः॥

जूर्णाख्य:, पुं, (जूर+क्तः। जूर्ण इति आख्या यस्य।) तृणविशेषः। उलू इति भाषा॥ तत्पर्य्यायः। सूच्यग्रः २ स्थूलकः ३ दर्भः ४ खरच्छदः ५। इति रत्नमाला॥ उलूकम् ६ उलपः ७। इति केचित्॥

जूर्णाह्वय:, पुं, (जूर्ण इति आह्वयः आख्या यस्य।) देवधान्यम्। इति हेमचन्द्रः॥

जूर्णिः, स्त्री, (ज्वर+"वीज्याज्वरिभ्यो निः।" उणां। ४। ४८। इति निः। "ज्वरत्वरेति।" ६। ४। २०। इत्यूट् च।) वेगः। इत्युणादिकोषः॥ आदित्यः। देहः ब्रह्मा। ज्वरः। इति संक्षिप्तसारे उणादिवृत्तिः॥

जूर्त्तिः, स्त्री, (ज्वर्+भावे क्तिन्। "ज्वरत्वरेत्यादिना" ऊट् च।) ज्वरः। इत्यमरः। ३।२।३६॥

जूष, ष वधे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-उभं-सकं-सेट्।) षष्ठस्वरी। ष, जूषति जूषते। परस्मैपदीत्यन्ये। इति दुर्गादासः॥

जूषं, क्ली, पुं, (यूष+पृषोदरात् साधुः।) यूषम्। मुद्गादिक्वाथरसः। इति लिङ्गादिसंग्रहटीकायां भरतः॥

जूषणं, क्ली, (जूष्यतेऽनेनेति। जूष+करणे ल्युट्।) वृक्षविशेषः। इति शब्दचन्द्रिका॥ घाइफुल इति भाषा॥

जृ, ञकारे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-परं-सकं-अनिट्।) न्यक्कारस्तिरस्करणम्। जरति शत्रुं शूरः। इति दुर्गादासः॥

जृभ, इ ङ जृम्भे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-आत्मं-अकं-सेट्।) सप्तमस्वरी। इ, जृम्भते। ङ, जृम्भते। इति दुर्गादासः॥

जृभ, ङ ई जृम्भे। गात्रशैथिल्य इति यावत्। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-आत्मं-अकं-सेट्।) ङ, जर्भते। ई, जृब्धः। इति दुर्गादासः॥

जृम्भः, पुं क्ली, (जृम्भ+भावे घञ्।) सुखादिविकाशः। हाइ इति भाषा॥ तत्पर्य्यायः। जृम्भणम् २ जृम्भा ३ जृम्भिका ४। इति शब्दरत्नावली॥ जम्भा ५ जम्भका ६। इति राजनिर्घण्टः॥ (अस्य लक्षणं यथा, सुश्रुते। ३। ४।
"निद्रार्त्तस्येव यस्येहा तस्य तन्द्रीं विनिर्द्दिशेत्।
पीत्वैकमनिलोच्छ्वासमुद्वेष्टन् विवृताननः॥
यन्मुञ्चति सनेत्रास्रं स जृम्भ इति संज्ञितः॥")
"जृम्भात्यर्थं समीरणात्।" इति वैद्यकम्॥
"क्षुद्रुत्पतनजृम्भेषु जीवोत्तिष्ठाङ्गुलिध्वनिः।
अवश्यमेव कर्त्तव्यश्चान्यथा तद्वधी भवेत्॥"
इति कर्म्मलोचनम्॥ * ॥
विकाशः। स्फारितः। इति शब्दरत्नावली॥ (यथा, प्रबोधचन्द्रोदये। ४। २८। "एताश्च प्रतिमुकुललग्नमधुपावलीरणितमुखरा जृम्भारम्भभरविगलन्मकरन्ददुर्द्दिनाः कुसुमसुरभयः॥")

जृम्भणं, क्ली, (जृम्भ+भावे ल्युट्।) जृम्भः। इत्यमरः। १। ७। ३५॥ (यथा, सुश्रुते। ३। १।
"इन्द्रियार्थेष्वसंप्राप्तिर्गौरवं जृम्भणं क्लमः॥")

जृम्भा, स्त्री, (जृम्भ+भावे घञ् ततष्टाप्।) जृम्भः। इति शब्दरत्नावली॥ (यथा, देवीभागवते। १। १५। ६१।
"तुष्टिः पुष्टिः क्षमा लज्जा जृम्भा तन्द्रा च
शक्तयः॥")

जृम्भिका, स्त्री, (जृम्भा+स्वार्थे कन् टापि अत इत्वञ्च।) जृम्भः। इति शब्दरत्नावली॥ (निद्रावेगधारणजनितरोगविशेषः। यथा, वाभटे सूत्रस्थाने चतुर्थेऽध्याये।
"निद्राया मोहमूर्द्धाक्षिगौरवालस्यजृम्भिकाः।
अङ्गमर्द्दश्च तत्रेष्टः स्वप्नः संवाहनानि च॥"
जृम्भ+णिच्+ण्वुल्। टापि अत इत्वम्। जृम्भणकारकोऽस्त्रविशेषः। यथा, महाभारते। ५। ६। ५२।
"अहन्तस्ते महासत्त्वा जृम्भिकां हत्तनाशिनीम्॥")

जृम्भितं, क्ली, (जृभि+भावे क्तः।) विचेष्टितम्। प्रवृद्धम्। जृम्भा। स्फुटितम्। इति हेमचन्द्रः॥ (यथा, कथासरित्सागरे। २६। ८६।
"अहो किमेतदाश्चर्य्यमायाडम्बरजृम्भितम्॥")
स्त्रीणां करणम्। इति मेदिनी। ते, ११२॥

जृम्भिणी, स्त्री, (जृभि+णिनिः।) एलापर्णी। इति शब्दचन्द्रिका॥ (एलापर्णीशब्देऽस्या विशेषो ज्ञेयः॥)

जॄ, इर् ष म य ज्याने। इति कविकल्पद्रुमः॥ (दिवां-परं-अकं-अनिट्।) इर्; अजरत् अजारीत्। ष, जरा। म, जरयति। य, जीर्य्यति। ज्यानं गतवहुवयोभावः। इति दुर्गादासः॥

जॄ, गि कि ज्याने। इति कविकल्पद्रुमः॥ (क्र्यां-चुरांपक्षे भ्वां-च-परं-अकं-सेट्।) गि, जृणाति जीर्णः जीर्णिः। कि, जारयति जरति। इति दुर्गादासः॥

जेता, [ऋ] त्रि, (जयतीति। जि+तृच्।) जयशीलः। तत्पर्य्यायः। जिष्णुः २ जित्वरः ३ जैत्रः ४। इत्यमरः। २। ८। ७७॥ (यथा, रघुः। १२। ८९।
"जेतारं लोकपालानां स्वमुखैरर्च्चितेश्वरम्॥"